



ADVIKA SANKRITYA

06 Jan 2012

04:50 AM

Ranchi

Model: All-Dosha-Report

Order No: 120484901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 5-06/01/2012
दिन _____: गुरु-शुक्रवार
जन्म समय _____: 04:50:00 घंटे
इष्ट _____: 55:44:37 घटी
स्थान _____: Ranchi
राज्य _____: Jharkhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 23:00:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:00:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:10:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 05:00:00 घंटे
वेलान्तर _____: -00:05:03 घंटे
साम्पातिक काल _____: 11:59:51 घंटे
सूर्योदय _____: 06:32:09 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:18:16 घंटे
दिनमान _____: 10:46:07 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शिशिर
सूर्य के अंश _____: 20:59:45 धनु
लग्न के अंश _____: 26:21:24 वृश्चिक

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: वृश्चिक - मंगल
राशि-स्वामी _____: वृष - शुक्र
नक्षत्र-चरण _____: रोहिणी - 1
नक्षत्र स्वामी _____: चन्द्र
योग _____: शुभ
करण _____: बालव
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सर्प
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: वैश्य
वश्य _____: चतुष्पाद
वर्ग _____: गरुड़
युँजा _____: पूर्व
हंसक _____: भूमि
जन्म नामाक्षर _____: ओ-ओमप्रकाश
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मकर

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1933	पौष	16
पंजाबी	संवत : 2068	पौष	22
बंगाली	सन् : 1418	पौष	21
तमिल	संवत : 2068	मार्गडी	22
केरल	कोल्लम : 1187	धनु	21
नेपाली	संवत : 2068	पौष	22
चैत्रादि	संवत : 2068	पौष	शुक्ल 12
कार्तिकादि	संवत : 2068	पौष	शुक्ल 12

पंचांग

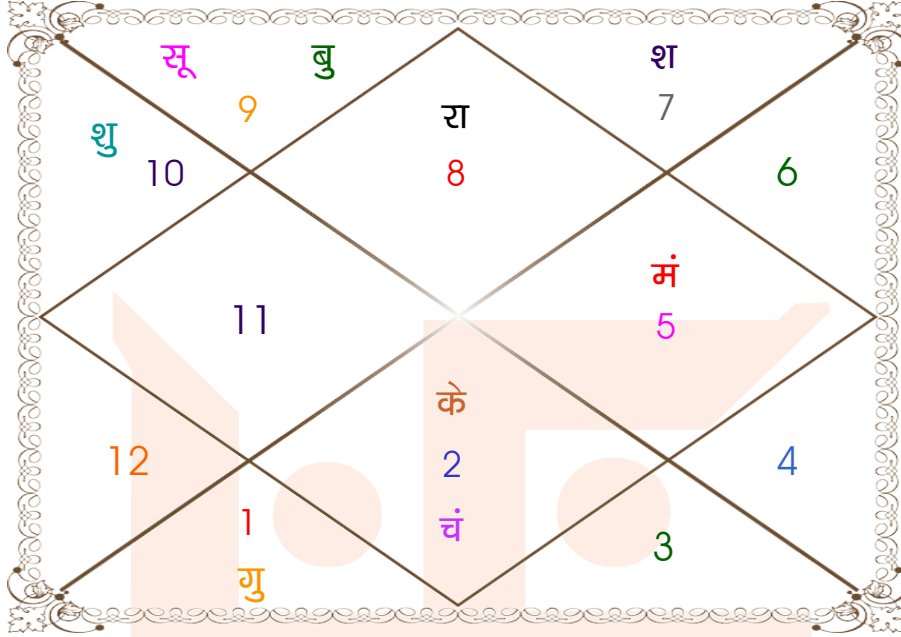
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 11
 तिथि समाप्ति काल _____ : 08:35:40
 जन्म तिथि _____ : 12
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : कृतिका
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 24:13:48 घंटे
 जन्म योग _____ : रोहिणी
 सूर्योदय कालीन योग _____ : साध्य
 योग समाप्ति काल _____ : 10:32:44 घंटे
 जन्म योग _____ : शुभ
 सूर्योदय कालीन करण _____ : विष्टि
 करण समाप्ति काल _____ : 08:35:40 घंटे
 जन्म करण _____ : बालव
 भयात _____ : 11:30:31
 भोग _____ : 65:17:39
 भोग्य दशा काल _____ : चंद्र 8 वर्ष 3 मा 0 दि

घात चक्र

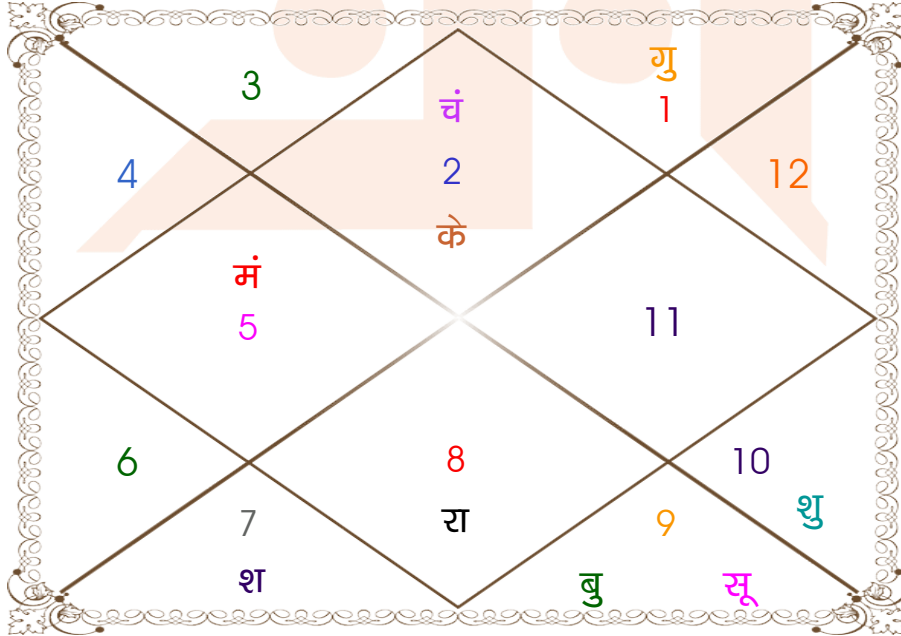
मास _____ : मार्गशीर्ष
 तिथि _____ : 5-10-15
 दिन _____ : शनिवार
 नक्षत्र _____ : हस्त
 योग _____ : शुक्ल
 करण _____ : शकुनि
 प्रहर _____ : 4
 वर्ग _____ : सर्प
 लग्न _____ : वृष
 सूर्य _____ : वृश्चिक
 चन्द्र _____ : कन्या
 मंगल _____ : धनु
 बुध _____ : कन्या
 गुरु _____ : मकर
 शुक्र _____ : मकर
 शनि _____ : तुला
 राहु _____ : मकर

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	गु	के चं	
शु			मं
बु सू	रा ल	श	

लग्न कुंडली

के चं	गु		
		शु	
मं	श	सू बु	ल रा

विंशोत्तरी
चन्द्र 8वर्ष 3मा 0दि
चन्द्र

06/01/2012

08/04/2130

चन्द्र	07/04/2020
मंगल	07/04/2027
राहु	07/04/2045
गुरु	07/04/2061
शनि	07/04/2080
बुध	07/04/2097
केतु	08/04/2104
शुक्र	08/04/2124
सूर्य	08/04/2130

योगिनी
सिद्धा 5वर्ष 9मा 9दि
मंगला

15/10/2025

16/10/2026

मंगला	26/10/2025
पिंगला	15/11/2025
धान्या	15/12/2025
भ्रामरी	25/01/2026
भद्रिका	17/03/2026
उल्का	17/05/2026
सिद्धा	27/07/2026
संकटा	16/10/2026

JYOTISACHARYA IIMT university meerut

PT.BIRENDRA DUBEY(GOLD medalist)sampark daltonganj & Ranchi

9973491191

dubyebybirendra@gmail.com

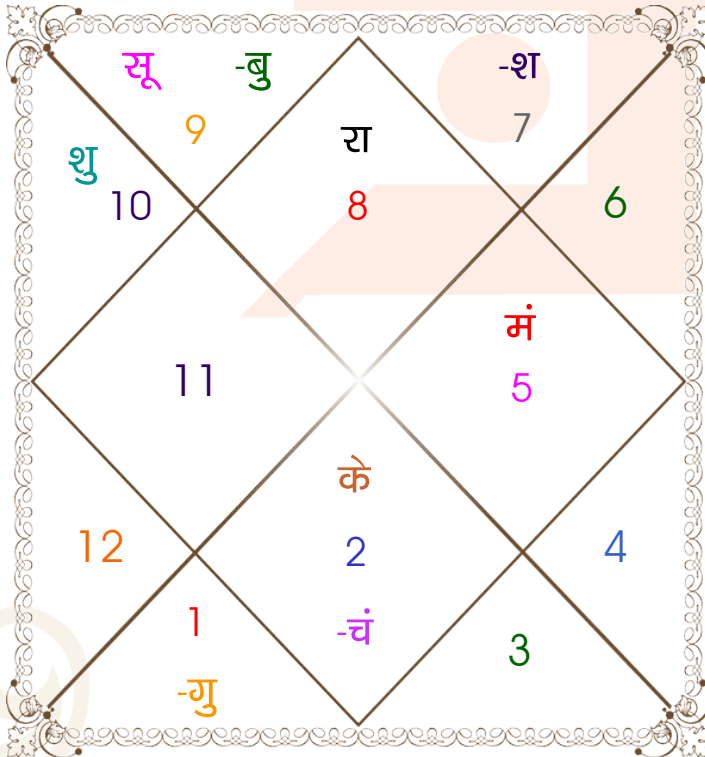
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	26:21:24	322:07:19	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	गुरु	---
सूर्य			धनु	20:59:45	01:01:08	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	गुरु	मित्र राशि
चंद्र			वृष	12:19:51	12:10:19	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	मूलत्रिकोण
मंगल			सिंह	27:10:43	00:11:53	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	सूर्य	मित्र राशि
बुध			धनु	02:40:20	01:25:08	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	सम राशि
गुरु			मेष	06:32:50	00:02:17	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	राहु	मित्र राशि
शुक्र			मकर	25:53:09	01:13:24	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	मित्र राशि
शनि			तुला	04:33:14	00:03:19	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	शुक्र	उच्च राशि
राहु			वृश्चि	20:02:58	00:00:50	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	शत्रु राशि
केतु			वृष	20:02:58	00:00:50	रोहिणी	4	4	शुक्र	चंद्र	केतु	सम राशि
हर्ष			मीन	06:54:58	00:01:21	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	---
नेप			कुंभ	05:00:01	00:01:46	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	सूर्य	---
प्लूटो			धनु	13:28:16	00:02:08	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
दशम भाव			कन्या	05:56:04	--	उ०फाल्गुनी	--	12	बुध	सूर्य	बुध	--

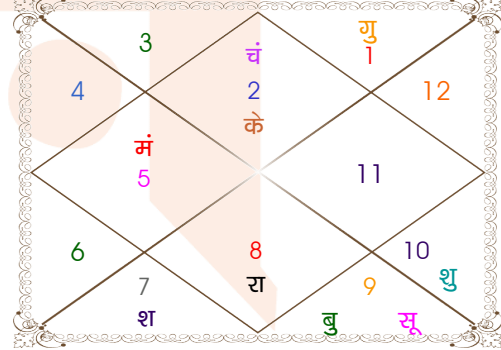
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:01:47

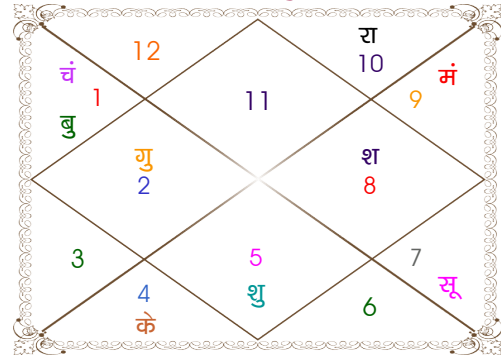
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



JYOTISACHARYA IIMT university meerut

PT.BIRENDRA DUBEY(GOLD medalist)sampark daltonganj & Ranchi

9973491191

dubeybirendra@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 12:57:11	वृश्चिक 26:21:24
2	धनु 12:57:11	धनु 29:32:57
3	मकर 16:08:44	कुम्भ 02:44:30
4	कुम्भ 19:20:17	मीन 05:56:04
5	मीन 19:20:17	मेष 02:44:30
6	मेष 16:08:44	मेष 29:32:57
7	वृष 12:57:11	वृष 26:21:24
8	मिथुन 12:57:11	मिथुन 29:32:57
9	कर्क 16:08:44	सिंह 02:44:30
10	सिंह 19:20:17	कन्या 05:56:04
11	कन्या 19:20:17	तुला 02:44:30
12	तुला 16:08:44	तुला 29:32:57

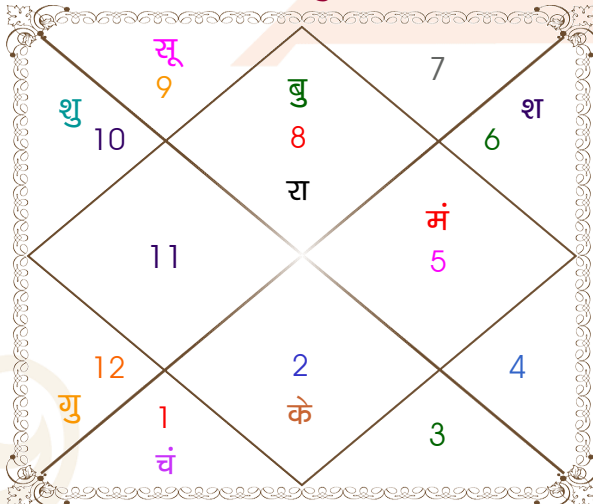
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक 26:21:24	
2	धनु 27:42:29	
3	कुम्भ 01:49:23	
4	मीन 05:56:04	
5	मेष 06:22:35	
6	वृष 02:30:59	
7	वृष 26:21:24	
8	मिथुन 27:42:29	
9	सिंह 01:49:23	
10	कन्या 05:56:04	
11	तुला 06:22:35	
12	वृश्चिक 02:30:59	

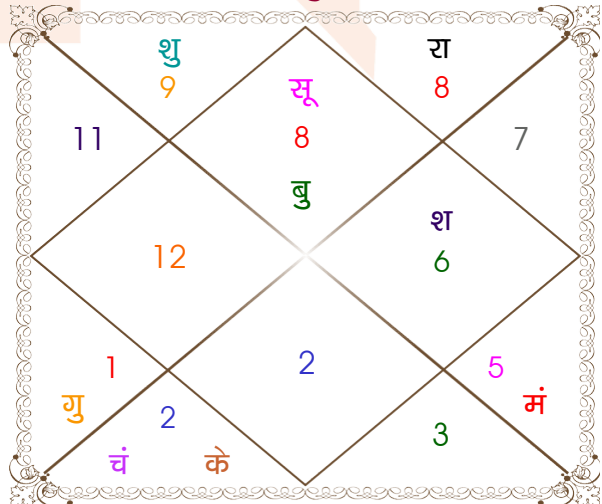
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



भाव कुंडली



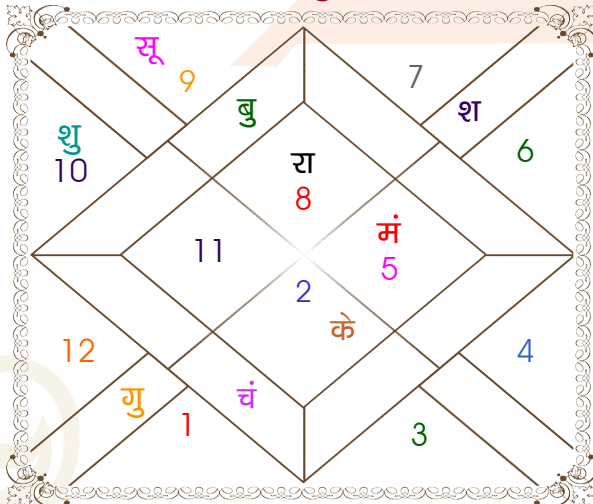
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----					
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भातृ	पितृ	वृद्ध	मुदित	नेत्रपाणि	3.94	33 %
चंद्र	मातृ	मातृ	युवा	स्वस्थ	नेत्रपाणि	17.07	33 %
मंगल	आत्मा	भातृ	मृत	मुदित	सभा	0.81	66 %
बुध	कलत्र	ज्ञाति	बाल	शान्त	कौतुक	1.42	48 %
गुरु	पुत्र	धन	कुमार	मुदित	गमन	3.56	58 %
शुक्र	अमात्य	कलत्र	बाल	मुदित	सभा	7.05	42 %
शनि	ज्ञाति	आयु	बाल	दीप्त	कौतुक	13.71	55 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	खल	सभा	0.00	47 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	शान्त	सभा	0.00	47 %
कुल						47.56	

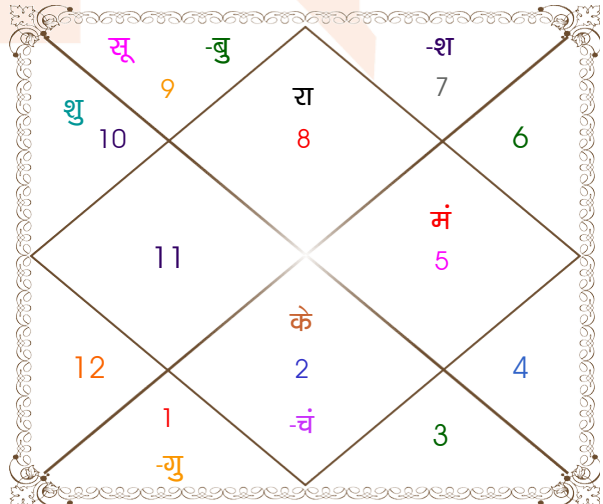
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उ०फाल्गुनी
हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा
श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : चन्द्र 8 वर्ष 3 मास 0 दिन

चंद्र 10 वर्ष 06/01/2012 07/04/2020	मंगल 7 वर्ष 07/04/2020 07/04/2027	राहु 18 वर्ष 07/04/2027 07/04/2045	गुरु 16 वर्ष 07/04/2045 07/04/2061	शनि 19 वर्ष 07/04/2061 07/04/2080
00/00/0000	मंगल 03/09/2020	राहु 19/12/2029	गुरु 26/05/2047	शनि 10/04/2064
06/01/2012	राहु 21/09/2021	गुरु 13/05/2032	शनि 06/12/2049	बुध 19/12/2066
राहु 08/03/2013	गुरु 28/08/2022	शनि 20/03/2035	बुध 13/03/2052	केतु 28/01/2068
गुरु 08/07/2014	शनि 07/10/2023	बुध 07/10/2037	केतु 17/02/2053	शुक्र 29/03/2071
शनि 06/02/2016	बुध 03/10/2024	केतु 25/10/2038	शुक्र 19/10/2055	सूर्य 10/03/2072
बुध 07/07/2017	केतु 01/03/2025	शुक्र 25/10/2041	सूर्य 06/08/2056	चंद्र 10/10/2073
केतु 05/02/2018	शुक्र 02/05/2026	सूर्य 19/09/2042	चंद्र 06/12/2057	मंगल 18/11/2074
शुक्र 07/10/2019	सूर्य 06/09/2026	चंद्र 19/03/2044	मंगल 12/11/2058	राहु 24/09/2077
सूर्य 07/04/2020	चंद्र 07/04/2027	मंगल 07/04/2045	राहु 07/04/2061	गुरु 07/04/2080
बुध 17 वर्ष 07/04/2080 07/04/2097	केतु 7 वर्ष 07/04/2097 08/04/2104	शुक्र 20 वर्ष 08/04/2104 08/04/2124	सूर्य 6 वर्ष 08/04/2124 08/04/2130	चंद्र 10 वर्ष 08/04/2130 00/00/0000
बुध 03/09/2082	केतु 03/09/2097	शुक्र 08/08/2107	सूर्य 26/07/2124	चंद्र 07/02/2131
केतु 01/09/2083	शुक्र 03/11/2098	सूर्य 07/08/2108	चंद्र 25/01/2125	मंगल 08/09/2131
शुक्र 01/07/2086	सूर्य 11/03/2099	चंद्र 08/04/2110	मंगल 02/06/2125	राहु 07/01/2132
सूर्य 08/05/2087	चंद्र 10/10/2099	मंगल 08/06/2111	राहु 26/04/2126	00/00/0000
चंद्र 06/10/2088	मंगल 08/03/2100	राहु 08/06/2114	गुरु 13/02/2127	00/00/0000
मंगल 04/10/2089	राहु 27/03/2101	गुरु 06/02/2117	शनि 26/01/2128	00/00/0000
राहु 22/04/2092	गुरु 03/03/2102	शनि 08/04/2120	बुध 01/12/2128	00/00/0000
गुरु 29/07/2094	शनि 11/04/2103	बुध 07/02/2123	केतु 08/04/2129	00/00/0000
शनि 07/04/2097	बुध 08/04/2104	केतु 08/04/2124	शुक्र 08/04/2130	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल चंद्र 8 वर्ष 2 मा 25 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - शुक्र 01/03/2025 02/05/2026	मंगल - सूर्य 02/05/2026 06/09/2026	मंगल - चंद्र 06/09/2026 07/04/2027	राहु - राहु 07/04/2027 19/12/2029	राहु - गुरु 19/12/2029 13/05/2032
शुक्र 11/05/2025 सूर्य 02/06/2025 चंद्र 07/07/2025 मंगल 01/08/2025 राहु 04/10/2025 गुरु 30/11/2025 शनि 05/02/2026 बुध 07/04/2026 केतु 02/05/2026	सूर्य 08/05/2026 चंद्र 19/05/2026 मंगल 26/05/2026 राहु 14/06/2026 गुरु 01/07/2026 शनि 22/07/2026 बुध 09/08/2026 केतु 16/08/2026 शुक्र 06/09/2026	चंद्र 24/09/2026 मंगल 07/10/2026 राहु 08/11/2026 गुरु 06/12/2026 शनि 09/01/2027 बुध 08/02/2027 केतु 20/02/2027 शुक्र 28/03/2027 सूर्य 07/04/2027	राहु 02/09/2027 गुरु 12/01/2028 शनि 16/06/2028 बुध 03/11/2028 केतु 30/12/2028 शुक्र 13/06/2029 सूर्य 01/08/2029 चंद्र 22/10/2029 मंगल 19/12/2029	गुरु 14/04/2030 शनि 31/08/2030 बुध 02/01/2031 केतु 23/02/2031 शुक्र 19/07/2031 सूर्य 01/09/2031 चंद्र 13/11/2031 मंगल 03/01/2032 राहु 13/05/2032
राहु - शनि 13/05/2032 20/03/2035	राहु - बुध 20/03/2035 07/10/2037	राहु - केतु 07/10/2037 25/10/2038	राहु - शुक्र 25/10/2038 25/10/2041	राहु - सूर्य 25/10/2041 19/09/2042
शनि 25/10/2032 बुध 22/03/2033 केतु 21/05/2033 शुक्र 11/11/2033 सूर्य 02/01/2034 चंद्र 30/03/2034 मंगल 29/05/2034 राहु 01/11/2034 गुरु 20/03/2035	बुध 30/07/2035 केतु 22/09/2035 शुक्र 25/02/2036 सूर्य 11/04/2036 चंद्र 28/06/2036 मंगल 21/08/2036 राहु 08/01/2037 गुरु 12/05/2037 शनि 07/10/2037	केतु 29/10/2037 शुक्र 01/01/2038 सूर्य 20/01/2038 चंद्र 21/02/2038 मंगल 15/03/2038 राहु 12/05/2038 गुरु 02/07/2038 शनि 01/09/2038 बुध 25/10/2038	शुक्र 26/04/2039 सूर्य 19/06/2039 चंद्र 19/09/2039 मंगल 22/11/2039 राहु 04/05/2040 गुरु 27/09/2040 शनि 20/03/2041 बुध 22/08/2041 केतु 25/10/2041	सूर्य 10/11/2041 चंद्र 08/12/2041 मंगल 27/12/2041 राहु 14/02/2042 गुरु 30/03/2042 शनि 21/05/2042 बुध 07/07/2042 केतु 26/07/2042 शुक्र 19/09/2042
राहु - चंद्र 19/09/2042 19/03/2044	राहु - मंगल 19/03/2044 07/04/2045	गुरु - गुरु 07/04/2045 26/05/2047	गुरु - शनि 26/05/2047 06/12/2049	गुरु - बुध 06/12/2049 13/03/2052
चंद्र 03/11/2042 मंगल 05/12/2042 राहु 25/02/2043 गुरु 09/05/2043 शनि 04/08/2043 बुध 21/10/2043 केतु 22/11/2043 शुक्र 21/02/2044 सूर्य 19/03/2044	मंगल 11/04/2044 राहु 07/06/2044 गुरु 28/07/2044 शनि 27/09/2044 बुध 21/11/2044 केतु 13/12/2044 शुक्र 15/02/2045 सूर्य 06/03/2045 चंद्र 07/04/2045	गुरु 20/07/2045 शनि 20/11/2045 बुध 11/03/2046 केतु 25/04/2046 शुक्र 02/09/2046 सूर्य 11/10/2046 चंद्र 15/12/2046 मंगल 29/01/2047 राहु 26/05/2047	शनि 20/10/2047 बुध 28/02/2048 केतु 22/04/2048 शुक्र 23/09/2048 सूर्य 08/11/2048 चंद्र 24/01/2049 मंगल 19/03/2049 राहु 05/08/2049 गुरु 06/12/2049	बुध 03/04/2050 केतु 21/05/2050 शुक्र 06/10/2050 सूर्य 16/11/2050 चंद्र 24/01/2051 मंगल 14/03/2051 राहु 16/07/2051 गुरु 03/11/2051 शनि 13/03/2052

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - केतु 13/03/2052 17/02/2053	गुरु - शुक्र 17/02/2053 19/10/2055	गुरु - सूर्य 19/10/2055 06/08/2056	गुरु - चंद्र 06/08/2056 06/12/2057	गुरु - मंगल 06/12/2057 12/11/2058
केतु 02/04/2052 शुक्र 29/05/2052 सूर्य 15/06/2052 चंद्र 13/07/2052 मंगल 02/08/2052 राहु 23/09/2052 गुरु 07/11/2052 शनि 31/12/2052 बुध 17/02/2053	शुक्र 30/07/2053 सूर्य 16/09/2053 चंद्र 06/12/2053 मंगल 01/02/2054 राहु 27/06/2054 गुरु 04/11/2054 शनि 07/04/2055 बुध 23/08/2055 केतु 19/10/2055	सूर्य 03/11/2055 चंद्र 27/11/2055 मंगल 14/12/2055 राहु 27/01/2056 गुरु 06/03/2056 शनि 21/04/2056 बुध 02/06/2056 केतु 19/06/2056 शुक्र 06/08/2056	चंद्र 16/09/2056 मंगल 14/10/2056 राहु 26/12/2056 गुरु 01/03/2057 शनि 18/05/2057 बुध 26/07/2057 केतु 23/08/2057 शुक्र 12/11/2057 सूर्य 06/12/2057	मंगल 26/12/2057 राहु 15/02/2058 गुरु 02/04/2058 शनि 26/05/2058 बुध 13/07/2058 केतु 02/08/2058 शुक्र 28/09/2058 सूर्य 15/10/2058 चंद्र 12/11/2058
गुरु - राहु 12/11/2058 07/04/2061	शनि - शनि 07/04/2061 10/04/2064	शनि - बुध 10/04/2064 19/12/2066	शनि - केतु 19/12/2066 28/01/2068	शनि - शुक्र 28/01/2068 29/03/2071
राहु 24/03/2059 गुरु 19/07/2059 शनि 05/12/2059 बुध 07/04/2060 केतु 28/05/2060 शुक्र 21/10/2060 सूर्य 04/12/2060 चंद्र 15/02/2061 मंगल 07/04/2061	शनि 28/09/2061 बुध 03/03/2062 केतु 06/05/2062 शुक्र 05/11/2062 सूर्य 30/12/2062 चंद्र 31/03/2063 मंगल 03/06/2063 राहु 15/11/2063 गुरु 10/04/2064	बुध 27/08/2064 केतु 23/10/2064 शुक्र 05/04/2065 सूर्य 24/05/2065 चंद्र 14/08/2065 मंगल 11/10/2065 राहु 07/03/2066 गुरु 16/07/2066 शनि 19/12/2066	केतु 11/01/2067 शुक्र 20/03/2067 सूर्य 09/04/2067 चंद्र 13/05/2067 मंगल 06/06/2067 राहु 05/08/2067 गुरु 28/09/2067 शनि 01/12/2067 बुध 28/01/2068	शुक्र 07/08/2068 सूर्य 04/10/2068 चंद्र 09/01/2069 मंगल 17/03/2069 राहु 07/09/2069 गुरु 08/02/2070 शनि 10/08/2070 बुध 21/01/2071 केतु 29/03/2071
शनि - सूर्य 29/03/2071 10/03/2072	शनि - चंद्र 10/03/2072 10/10/2073	शनि - मंगल 10/10/2073 18/11/2074	शनि - राहु 18/11/2074 24/09/2077	शनि - गुरु 24/09/2077 07/04/2080
सूर्य 16/04/2071 चंद्र 15/05/2071 मंगल 04/06/2071 राहु 26/07/2071 गुरु 10/09/2071 शनि 04/11/2071 बुध 23/12/2071 केतु 12/01/2072 शुक्र 10/03/2072	चंद्र 27/04/2072 मंगल 31/05/2072 राहु 26/08/2072 गुरु 11/11/2072 शनि 11/02/2073 बुध 04/05/2073 केतु 06/06/2073 शुक्र 11/09/2073 सूर्य 10/10/2073	मंगल 02/11/2073 राहु 02/01/2074 गुरु 25/02/2074 शनि 30/04/2074 बुध 26/06/2074 केतु 20/07/2074 शुक्र 25/09/2074 सूर्य 16/10/2074 चंद्र 18/11/2074	राहु 24/04/2075 गुरु 09/09/2075 शनि 21/02/2076 बुध 18/07/2076 केतु 16/09/2076 शुक्र 09/03/2077 सूर्य 30/04/2077 चंद्र 26/07/2077 मंगल 24/09/2077	गुरु 26/01/2078 शनि 21/06/2078 बुध 30/10/2078 केतु 23/12/2078 शुक्र 27/05/2079 सूर्य 12/07/2079 चंद्र 27/09/2079 मंगल 20/11/2079 राहु 07/04/2080

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

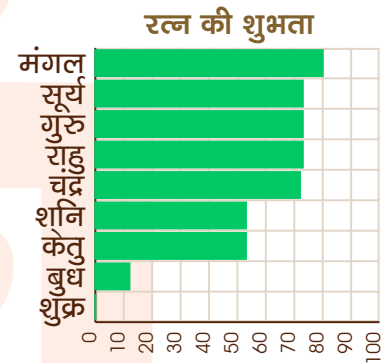
मूलांक	6
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	80%	व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य
माणिक्य	सूर्य	73%	धन, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	73%	शत्रु व रोग मुक्ति, धन, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	73%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	72%	दम्पति, भाग्योदय
नीलम	शनि	53%	कम खर्च, पराक्रम, सुख
लहसुनिया	केतु	53%	दम्पति, पराक्रम
पन्ना	बुध	12%	धन हानि, दुर्घटना, हानि
हीरा	शुक्र	0%	पराक्रम हानि, दाम्पत्य कष्ट, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
चंद्र	07/04/2020	80%	85%	80%	25%	73%	0%	53%	61%	31%
मंगल	07/04/2027	80%	78%	92%	0%	80%	0%	53%	61%	59%
राहु	07/04/2045	61%	60%	67%	12%	73%	9%	59%	86%	31%
गुरु	07/04/2061	80%	78%	86%	0%	86%	0%	53%	73%	53%
शनि	07/04/2080	61%	60%	67%	25%	73%	9%	66%	80%	31%
बुध	07/04/2097	80%	60%	80%	38%	73%	9%	53%	73%	53%
केतु	08/04/2104	61%	60%	86%	12%	73%	9%	31%	61%	66%
शुक्र	08/04/2124	61%	60%	80%	25%	73%	22%	59%	80%	59%
सूर्य	08/04/2130	86%	78%	86%	12%	80%	0%	31%	61%	31%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066 03/07/2066-30/08/2068	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/05/2086-21/05/2086 08/02/2087-18/07/2088 31/10/2088-05/04/2089	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	19/09/2090-25/10/2090 21/05/2091-02/07/2093	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/08/2095-11/10/2097 02/05/2098-20/06/2098	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
सम
शुभ
अशुभ
सम

क्षेत्र

धन
शत्रु से कष्ट
दम्पति
दुर्घटना से बचाव
व्यावसायिक परेशानी

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।

स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् । ।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में है। अतः आप चन्द्र कुंडली से मांगलिक है। चूंकि यह योग भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा चल एवं अचल सम्पत्ति को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। शारीरिक रूप से आप सामान्यतया स्वस्थ ही रहेंगे तथा मानसिक सन्तुष्टि भी बनी रहेगी। आपके विवाह में किंचित विलम्ब होगा तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी रुकावटें उत्पन्न होगी परन्तु अन्ततः इस में सफलता मिल ही जाएगी। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा लेकिन इसका दाम्पत्य जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा तथा सुख पूर्वक आप अपना समय व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

चतुर्थ भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे। इसकी सप्तम भाव पर दृष्टि से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में उग्रता रहेगी लेकिन सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप कार्य क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक नित्य उन्नतिशील रहेंगे। साथ ही किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती है तथा समाज से इच्छित मान सम्मान अर्जित करने में भी आपको सफलता मिलेगी। एकादश भाव पर दृष्टि के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया अनुकूल रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इसके अतिरिक्त परिश्रम पूर्वक आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी आप समर्थ रहेंगे।

मंगल की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे

पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इस दोष के भंग होने पर आपको इच्छित मात्रा में सांसारिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा चल एवं अचल सम्पत्ति को बनाने में भी आप समर्थ रहेंगे। साथ ही सर्वत्र सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी एवं जीवन में एक दूसरे को सुख तथा सहयोग प्रदान करके आप आत्मिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुंडली में चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली वृश्चिक लग्न की हैं। वृश्चिक लग्न के प्रभाव से आपके व्यक्तित्व पर मंगल का प्रभाव अधिक देखने को मिलता है। स्वभाव में उग्रता होने के कारण आप नेतृत्व शक्ति अच्छी है, परन्तु स्थिर राशि लग्न में होने के कारण आपके जीवन में स्थिरता रहती हैं। आप हर कार्य को टिक कर करते हैं। जल तत्व होने के कारण जिस तरह जल कभी बहुत शान्त और कभी उसमें उग्रता आने पर सब-कुछ तहस-नहस कर देता है वहीं बातें आपमें भी पायी जाती हैं। इसलिए आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण बनाये रखना चाहिए क्योंकि ऐसे में अक्सर आप अपना ही नुकसान कर बैठते हैं।

आप बहुत जल्दी घुल-मिल जाते हैं और सभी के बीच में अपनी जगह बना लेते हैं।

आपकी याददाश्त बहुत अच्छी है और कुछ भी भूलते नहीं हैं। व आपकी सहन शक्ति बहुत है। आपके स्वभाव में क्रोध रहता है परन्तु दिल के नरम हैं। आपको अनुशासनहीनता पसंद नहीं है। उदारता का गुण आपमें है। आप चंचल मस्तिष्क वाले तथा अधिक भावुक प्रकृति के हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भाव के नाम से जाने जाते हैं। तथा कुंडली के विशेष अशुभ भावों की श्रेणी में आते हैं। छठा स्थान दुस्थान है। व उपचय भाव हैं। छठे भाव का स्वामी और छठे भाव में बैठे ग्रह दोनों बुरा फल देते हैं। षष्ठ भाव से शत्रु, रोग, चिंता, ऋण और विमाता का विचार किया जाता है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है। त्रिक भावों में दूसरा भाव अष्टम भाव है। अष्टम भाव मृत्यु, आयु तथा बाधक भाव है। तथा अष्टम भाव निधन भी है।

अष्टम भाव में स्थित होने वाले ग्रहों का अपना और अपने स्वामित्व वाले भावों के बलों का नाश हो जाता है। तथा इस भाव का स्वामी अष्टमेश जिस भाव में बैठता है। उस भाव के फलों का नाश करता है। व जिस भाव का स्वामी अपने स्थान से अष्टम स्थान में स्थित होता है। उस भाव के फलों की हानि होती है। कुंडली का द्वादश भाव व्यय का पर्याय है। यह भाव हानियां, टैक्स, निद्रा, शैया भोग, शत्रु, अवनति, विदेश यात्रा का भाव है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं।

वृश्चिक लग्न में षष्ठ भाव के स्वामी मंगल है। लग्नेश व षष्ठेश मंगल आपके शरीर में शक्ति व आत्मबल की अल्प वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, भाग्य व कर्म के मार्ग में रुकावटें, प्रतिष्ठा में न्यूनता, व्यय अधिक, विदेश स्थानों से लाभ दे सकता है।

बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रह विच्छेद का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट बुध अष्टमेश व एकादशेश हैं, ग्रहविच्छेद का कारण, विदेश स्थान में निवास, शत्रुओं द्वारा शारीरिक कष्ट, परेशानियों के साथ लाभ प्राप्ति दे सकता है।

आपके लग्न के लिए शुक्र सप्तमेश व द्वादशेश हैं। द्वादश में शुक्र की राशी तुला होने से आप धार्मिक, धर्म के प्रति निष्ठा, बचपन कष्टमय, स्वजनों तथा मित्रों से लाभ, व्यय अनियंत्रित, शान-शौकत का प्रदर्शन, क्षीण नेत्र ज्योति, नौकरी में अधिक लाभ प्राप्त दे सकता है।

गुरु आपके छठे भाव में है, गुरु की यह स्थिति आपको शत्रुओं की अधिकता, शत्रुविजयी, धन संचयी, पदवृद्धि, बुद्धिमान, विचारवान, भाग्यवान और आध्यात्मिक भाव प्रदान कर रहा है।

आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रुचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5, 6, 7 मुखी

रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।



स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होते हैं तथा परिश्रम एवं लगन के द्वारा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करते हैं। स्वभाव से ये निडर होते हैं तथा कई विषयों के ज्ञानार्जन में इनकी रुचि रहती है तथा समाज में एक विद्वान के रूप में ये सम्मानित होते हैं। कुल या परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैं तथा बन्धु एवं मित्र वर्ग के मध्य आदरणीय समझे जाते हैं। आत्मशक्ति की इनमें प्रबलता रहती है तथा अत्यधिक महत्वाकांक्षी भी होते हैं। धनसंग्रह में ये तत्पर रहते हैं तथा धनार्जन में नैतिक मूल्यों का पालन कम ही करते हैं। भावुकता की इनमें न्यूनता रहती है तथा सभी कार्य बुद्धि के द्वारा संचालित होते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित के क्षेत्र में ये परिश्रमपूर्वक सफलता एवं ख्याति प्राप्त करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट होंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा। साथ ही स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे तथा धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप में निर्णयता तथा लगनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा फलतः कार्यक्षेत्र में आप प्रभावशाली रहेंगे तथा प्रतिष्ठा एवं यश प्राप्त करेंगे।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए नित्य परिश्रमशील रहेंगे। आपकी संग्रहशील प्रवृत्ति से यदा कदा स्वजनों को आपसे परेशानी की अनुभूति हो सकती है। आपके अधिकांश महत्वपूर्ण कार्य भावुकता के स्थान पर बुद्धिमत्ता से ही होंगे तथा आवश्यक सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

राहु की लग्न में स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा आप शारीरिक या मानसिक परेशानी की भी अनुभूति कर सकते हैं। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा आपके कार्यकलापों पर बुद्धिमत्ता की छाप होगी। एक विद्वान के रूप में भी आप समाज में अपनी पहचान बनाने में समर्थ होंगे तथा इच्छित आदर एवं प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेंगे।

आप एक चतुर व्यक्ति होंगे तथा दक्षतापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे फलतः लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपमें कर्तव्यपरायणता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अपने इस गुण से कार्यक्षेत्र में इच्छित उन्नति सम्मान एवं प्रतिष्ठा के मार्ग प्रशस्त करने में सफलता अर्जित करेंगे। स्त्री का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु परस्पर सांमजस्य स्थापित करके आप इसमें मधुरता लाने में सफलता प्राप्त करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा अवश्य रहेगी परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे परन्तु गंगास्नान या तीर्थ यात्रा अवश्य करेंगे। मित्र वर्ग में आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे आप सहयोग भी अर्जित करेंगे। इस प्रकार आप स्वस्थ पराक्रमी परिश्रमी एवं लगनशील पुरुष होंगे तथा जीवन में सुख संसाधनों

से युक्त होकर उनका उपभोग करेंगे ।



धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरुष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रुचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृत्ति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरुष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आप सासंसारिक एवं भौतिक सुखों को प्राप्त करने में समर्थ होंगे तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आपके पास आधुनिक सुख संसाधनों की बहुलता रहेगी। आप एक वैभव एवं ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में भी आपका यथोचित स्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति की आपको आवश्यकता प्राप्त होगी। भाईयों के प्रभाव एवं सहयोग से भी आप वांछित मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति को प्राप्त करेंगे। इससे आपके ऐश्वर्य तथा वैभव में वृद्धि होगी तथा परिश्रमी एवं पराक्रमी स्वभाव होने के कारण अन्यत्र से भी वांछित धन-सम्पत्ति अर्जित करेंगे। आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से शीघ्र एवं विशिष्ट लाभ के योग बनते हैं। अतः अचल सम्पत्ति पर ही अधिक निवेश करना चाहिए।

जीवन में आपको उत्तम घर की प्राप्ति होगी तथा आपका घर सामान्य रूप से आधुनिक सुख-सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से परिपूर्ण होगा तथा इसकी स्वच्छता एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप यथोचित प्रबंध करेंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे परंतु संबंधों में औपचारिकता ही होगी। इसके अतिरिक्त वाहन से भी युक्त होंगे तथा युवावस्था से ही इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी तेजस्वी, शिक्षित एवं बुद्धिमान महिला होंगी तथा वह भौतिकतावादी भी होगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा एवं अवसरानुकूल उनसे आप वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति कर सकते हैं। आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी सुख दुख में उनको पूर्ण सहयोग देंगे लेकिन परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में मधुरता कम ही होगी अतः ऐसी स्थितियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा लेकिन छोटी कक्षाओं में आप अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर लेंगे लेकिन स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम एवं बुद्धिमता का प्रदर्शन करना पड़ेगा। यदि आप किसी तकनीकी पाठ्यक्रम में डिप्लोमा करें तो यह आपके लिए उत्तम रहेगा तथा उसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता की प्राप्ति होगी। अतः आपको तकनीकी पाठ्य क्रम पर ही विशेष केन्द्रित रहना चाहिए।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता से ही सम्पन्न करेंगे। आप में शीघ्र एवं सकारात्मक निर्णय लेने की भी क्षमता विद्यमान होगी जिससे आपको वांछित सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा आपके इस गुण से अन्य जन भी आपसे प्रभावित होंगे। आप अपनी तीव्र बुद्धि से कठिन से कठिन समस्याओं का भी उचित समय पर समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन में आपकी रुचि कम ही होगी लेकिन आधुनिक विज्ञान, आयुर्विज्ञान या तकनीकी क्षेत्र में आप पूर्ण रुचि का प्रदर्शन करेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इन क्षेत्रों में आप कोई शोध कार्य या नवीन सिद्धांत के प्रतिपादन में भी समर्थ हो सकते हैं। इस प्रकार अपनी विद्वता से आप समाज में सम्मान जनक स्तर अर्जित करने में समर्थ होंगे।

पंचमभाव में मीन राशि की स्थिति के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में यद्यपि आपकी रुचि कम होगी परन्तु आपका प्रेम भावुकता से हीन होगा तथा इससे आदर्शवादिता, नैतिकता एवं यथार्थवादी दृष्टि कोण होगा एवं भावनात्मक आकर्षण की ही प्रबलता होगी। अतः आप प्रेम- प्रसंग में सफल भी हो सकते हैं।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्र संतति की अधिकता होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं बुद्धिमान होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण सम्मान एवं आदर का भाव होगा तथा उनकी आज्ञापालन में भी समान्यतया वे तत्पर होंगे परन्तु वे स्वतन्त्र प्रवृत्ति के होंगे अतः यदा-कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते हैं। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चपहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। वृद्धावस्था में बच्चों से आपको प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सेवा एवं सहयोग भी मिलता रहेगा जिससे आप वृद्धावस्था में सुख की अनुभूति करेंगे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपके बच्चे बुद्धिमान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी सिद्ध होंगे तथा प्रारम्भ से ही इस क्षेत्र में विशेष उन्नति का प्रदर्शन करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा दीक्षा का आधुनिक परिवेश में प्रबन्ध करेंगे तथा किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे जिससे वे जीवन में अच्छी उन्नति एवं सफलताएं अर्जित करके आपकी आकाक्षाओं को पूर्ण करेंगे। इसके अतिरिक्त वे अपने कार्यों में निपुण एवं व्यवहार कुशल होंगे तथा अन्य सामाजिक जनों को प्रसन्न तथा प्रभावित करने में समर्थ होंगे तथा वे भी उन्हें वांछित स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे। इस प्रकार बच्चों के संदर्भ में आप भाग्यशाली समझे जायेंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है तथा केतु की स्थिति भी सप्तम भाव में है। सामान्यतया वृष राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है परन्तु केतु के प्रभाव से उसमें उग्रता साहस एवं कर्तव्य के प्रति उपेक्षा का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी परन्तु उसमें उग्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अपने कार्य कलापों को वह पराक्रम एवं परिश्रम से सम्पन्न करेगी तथा उनके साहसिक कार्यों से अन्य जन भी प्रभावित होंगे। परन्तु केतु के प्रभाव से कर्तव्य परायणता के भाव की उनमें न्यूनता रहेगी तथा समाज एवं परिवार के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से कम ही पालन करेगी इससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी प्रभावित होगी लेकिन सामान्यतया वह व्यवहारिक महिला होंगी तथा गृह कार्यों को दक्षता से सम्पन्न करेगी।

आपकी पत्नी का सामान्यतया गौरवण होगा तथा कद भी सामान्य रहेगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंग प्रत्यंगों में पुष्टता रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य में निखार आएगा तथा व्यक्तित्व के आकर्षण में भी वृद्धि होगी। सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वह आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी प्रयोग करेगी। वृष राशि के प्रभाव से सुंदरता संगीत एवं कला के प्रति उनके मन में आकर्षण रहेगा तथा कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करने में तत्पर रहेंगी।

आपका विवाह सामान्यतया विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा परन्तु केतु के प्रभाव से आप स्वेच्छा से प्रेम विवाह भी कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन जीवन सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम एवं सदभाव होगा। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यों एवं योजनाओं को आपसी सहमति एवं सहयोग से पूर्ण करेंगे इससे समानता एवं विश्वसनीयता का भाव बना रहेगा लेकिन आप दोनों तेजस्वी स्वभाव के होंगे अतः यदा कदा संबंधों में तनाव तथा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न हो सकती है अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

आपका विवाह किसी मध्यम परिवार में होगा तथा आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से वे सम्पन्न होंगे। विवाह में आपको दहेज के रूप में धन सम्पति अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगी तथा अन्यत्र से बहुमूल्य उपहारों में भी न्यूनता होगी। विवाह के बाद सास ससुर से संबंध औपचारिक रहेंगे तथा मधुरता का अभाव रहेगा।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति विशेष सेवा एवं श्रद्धा का भाव नहीं होगा तथा सुख दुख में वह उनकी यथोचित सेवा नहीं करेगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके उग्रस्वभाव एवं कटुसभाषण से असन्तुष्ट होंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा ही हानि होगी एवं आपस में विश्वसनीयता भी कम होगी अतः साझेदारी की जीवन में उपेक्षा ही करनी चाहिए।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। साथ ही मंगल भी मित्र राशि में दशमभाव में ही स्थित है। सिंह राशि एवं मंगल दोनों ही अग्नि तत्व प्रधान है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया से युक्त होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें अल्पता होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र में आप सतत उन्नतिशील होंगे तथा स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के प्रति आपकी विशेष रुचि रहेगी तथा इसमें आपको सफलता की भी प्राप्ति होगी।

दशमभाव में सिंह राशिस्थ मंगल के प्रभाव से आपको डाक्टर, इंजीनियर, कम्प्यूटर विज्ञान, होटल प्रबंधक, सेना, पुलिस, एवं जेल आदि पराक्रमी विभाग में, अग्निशमन विभाग, औषधि विज्ञान, ऊर्जा एवं शक्ति विभाग आदि विभागों एवं क्षेत्रों में कार्य करने से वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त होगी तथा इसमें अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक इन्हीं क्षेत्रों में अपनी आजीविका को प्रारंभ करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए सोना चांदी आदि धातुओं का व्यापार, विद्युत उपकरणों का उत्पादन या विक्रय कार्य, औषधि विक्रय, होटल, अग्निशमन यंत्रों के निर्माण या विक्रय, शस्त्र विक्रय या निर्माण अथवा सैनिकों के वस्त्र आदि से वांछित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी साथ ही इन क्षेत्रों में आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको यत्नपूर्वक उपरोक्त क्षेत्रों या कार्यों में ही अपना व्यवसाय प्रारंभ करना चाहिए। साथ ही कम्प्यूटर से संबंधित कम्पनी आदि का भी आप संचालन कर सकते हैं।

दशमभाव में मंगल की सिंह राशि में स्थिति के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित मान प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी आप स्वपरिश्रम एवं योग्यता से अर्जित करेंगे जिससे समाज में आप का प्रभाव स्थापित होगा तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। साथ ही किसी सम्मानित या आधिकारिक संस्था में सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी के रूप में कार्यरत हो सकते हैं। इससे समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी जिससे आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी।

आपके पिता पराक्रमी तेजस्वी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा। साथ ही सभी लोग उनके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं उन्हें वांछित सम्मान देंगे। वे भी सामाजिक जनों की भलाई के कार्यों में तत्पर होंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव होगा तथा आपकी उच्च शिक्षा का यथोचित प्रबंध करके आपको योग्य नागरिक बनाएंगे। आपकी कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में भी उनका विशेष योगदान होगा तथा उनके प्रभाव से आपको प्रचुर मात्रा में मान सम्मान की प्राप्ति होगी। आप भी अपने उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान में वृद्धि करेंगे तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को उनकी सलाह

से सम्पन्न करेंगे। अपनी इस आज्ञाकारिता के भाव से पिता के आप प्रिय होंगे। आपके वैचारिक एवं सैद्धान्तिक विचारों में भी समानता होगी जिससे आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी।



वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु पंचम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि पंचम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि अष्टम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि नवम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि अष्टम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व पत्नी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

14 मई के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादश एवं द्वितीय स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी और आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं बड़े भाई का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपको रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। 30 मई के बाद चतुर्थस्थ राहु के कारण आपके परिवार में किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें धन का व्यय सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से पत्नी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

30 मई के बाद चतुर्थ स्थान का राहु आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। अचानक परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न हो सकता है। आपके

माता पिता एवं पुत्र का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा और आप भी मानसिक रूप अशान्त व तनावग्रस्त रहेंगे।

संतान

संतान के लिए यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में पंचम स्थान का राहु संतान संबंधित चिन्ताएं दे सकता है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। बच्चों को सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है।

दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। 14 मई के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय गर्भवती स्त्रियों को विशेष सावधानी की आवश्यकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ग्रहण करें जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहे।

परन्तु 14 मई के बाद का समय आपके स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसम जनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरु वायु तत्व राशि में होने कारण सांस, संक्रामक रोग व पेट संबंधित बीमारियों से कष्ट दे सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है।

विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल नहीं रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता की उम्मीद कम ही है। 14 मई के बाद उच्च शिक्षा में रुकावटें भी आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु कुछ समय और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि छोटी मोटी यात्रा कराती रहेगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का घ से दूर स्थानान्तरण हो सकता है।

यह स्थानान्तरण आपके लिए अनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी

करेंगे। मई के बाद अधिक व्यस्तता के कारण पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएँगे।

- नित्य प्रति सूर्य नमस्कार करें व सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार को काली वस्तुओं का दान करें एवं गरीबों को लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन पीली वस्तुएं जैसे केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटें और व्रत रखें।



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में तृतीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि में नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अष्टम स्थान का गुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बना रहा है अतः उस समय के अंतराल में आपको अपने कार्य व्यवसाय में किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करना चाहिए। आपके कार्य क्षेत्र में कुछ गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए सावधानी बरतें।

02 जून के बाद कोई भी कार्य प्रारम्भ करेंगे तो उसमें आपका भाग्य साथ देगा। व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद दशमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी पदोन्नति भी होगी और आपको कार्यस्थल पर मान-सम्मान भी प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप आर्थिक बचत करने में सफल रहेंगे। रत्न आभूषण इत्यादि का लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति के साथ-साथ वाहन का भी सुख प्राप्त होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

02 जून के बाद नवम स्थान का गुरु आर्थिक उन्नति के लिए और भी अच्छा रहेगा। आप इच्छित बचत कर पायेंगे। मांगलिक कार्य या सामाजिक कार्यों में धन खर्च हो सकता है। आप बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। चतुर्थस्थ राहु के प्रभाव से आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। उनकी बीमारी पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष बहुत अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का राहु पारिवारिक वातावरण के लिए अच्छा नहीं है। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी हो सकती है। आपके माता पिता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है।

02 जून के बाद समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आपको छोटे भाई-बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वगृही होने के कारण आपके बच्चों की उन्नति में मददगार होगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल से अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके बच्चों की उच्च शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। प्रथम संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। परन्तु दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

02 जून के बाद आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में अधिक रुचि बढ़ेगी। आप मानसिक रूप से संतुष्ट एवं शारीरिक रूप से आरोग्य रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य के कारण पढ़ाई में व्यवधान बना रहेगा।

02 जून से इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा के लिए समय काफी अच्छा है। तकनिकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। बेरोजगार जातकोंको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्रा करेंगे। 02 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती है। 31 अक्टूबर के बाद आपकी जन्म भूमि की यात्रा भी हो सकती है या पूरे परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। पंचमस्थ शनि के प्रभाव से साधना, योग या मन्त्र सिद्धि के प्रति आप अधिक समर्पित होंगे। 02 जून के बाद आप किसी को गुरु बना कर साधना भी कर सकते हैं। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे तथा उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें।
- वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि पंचम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं पंचम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष तृतीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। आपको कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। इस वर्ष आपका भाग्य आपके साथ है इसलिए आपका चौमुखी विकास होगा। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च अधिकारियों या वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ेगा।

जून के बाद समय अति उत्तम है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति हो सकती है। आपके कार्य व्यवसाय में समस्त शत्रुओं का दमन होगा। इस समय के अंतराल में आपके ब्राण्ड को पहचान भी लि सकती है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को भी लाभ हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आप भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ साथ रत्नाभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों के मांगलिक कार्यों में धन का व्यय होगा। धन की अनुकूलता के कारण आप खर्च भी अधिक करेंगे। 26 नवम्बर के बाद अचानक आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी, जिससे आप आर्थिक स्थिति को और भी सुदृढ़ करने में सफल रहेंगे।

घर-परिवार, समाज

व्यापारिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीयस्थ राहु पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

जून के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। परिवार में

परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अति उत्तम रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गर्भाधान के लिए बहुत ही शुभ समय चल रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है, क्योंकि भाग्य साथ नहीं देगा। अपने मेहनत के बल पर ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करना पड़ेगा। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु की पंचम दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद मौसम जनित बीमारी से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है परन्तु आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे। इस समय नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार आपके लिए लाभप्रद रहेगा। जल्दी सोना और सुबह जल्दी उठ कर टहलना आपके स्वास्थ्य के लिए अमृत सिद्ध होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। उनको करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

जून के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। जो व्यक्ति नौकरी की तलाश में हैं उनको नौकरी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी जो अधिक अनुकूल या उन्नति कारक होंगी। यात्रा के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है अथवा अपने पूरे परिवार के साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करते हैं। द्वादश स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवमस्थ गुरु के कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ यज्ञ एवं अनुष्ठान संपन्न करेंगे, जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं अपने गुरु के द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे। आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा और उस ज्ञान के माध्यम से परमात्मा के प्रति आत्म समर्पण का भाव उत्पन्न होगा। आध्यात्मिक ज्ञान के कारण आपको अलौकिक आनन्द की अनुभूति होगी।

- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए जल में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग प्रशस्त होंगे। आपके कार्य व्यवसाय में विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे। वरिष्ठ लोगों के सहयोग से आपके व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अपना ब्राण्ड नेम भी मिल सकता है। द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु वे आपका कुछ नहीं कर पाएंगे और आप अपने सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

24 जुलाई से आपका समय और बढ़िया हो रहा है। व्यापार में बढ़ोत्तरी के संकेत हैं। भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार के विस्तार के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। लाभ में निरन्तरता बनी रहेगी। फरवरी के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आपको शत्रु पक्ष से धन लाभ होगा। धन निवेश के लिए भी अच्छा समय चल रहा है।

24 जुलाई से रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से आपको लाभ होगा। द्वितीय स्थान का राहु अचानक कुछ अनावश्यक व्यय करा सकता है परन्तु सामान्य काम काज पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। निवेश के मामले में सावधान रहें। भाई-बहन या पुत्र के विवाह अवसर पर भी धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति व सहयोग का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है। तृतीयस्थ राहु के प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर द्वितीय स्थान में होगा। उस समय अचानक आपके परिवार में विषमता की स्थिति बन सकती है। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव ठीक नहीं रहेगा ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अंदर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी पड़ेगी।

संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से संतान के लिए उत्तम योग बन रहा है। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे।

गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है, तो उसका विवाह हो सकता है। मार्च से जून तक का समय कुछ प्रभावित रहेगा उसके बाद फिर से अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आप पूर्ण रूप से स्वस्थ बने रहेंगे। फरवरी के बाद मौसमजनित बीमारियों से यदि आप परेशान होते हैं तो जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

24 मई के बाद आर्थिक स्थिति को लेकर कुछ चिंताएं हो सकती हैं। द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु छठे स्थान का शनि शीघ्र ही स्वस्थ भी कर देगा। 24 जुलाई से स्वास्थ्य अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। बेरोजगारों को रोजगार मिल सकता है। व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप शत्रुओं को पछाड़कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी छोटी-छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होती रहेंगी। शनि ग्रह के गोचर के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी। गुरु ग्रह के प्रभाव से आप सामाजिक कार्यों हेतु यात्राएं कर सकते हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर व तन्त्र-मन्त्र के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा।

- घर में श्रीयन्त्र स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- माता-पिता की सेवा करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि छटे भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं छठे भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसायिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 29 मार्च के बाद समय और उत्तम हो रहा है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण आप व्यवसाय में इच्छित लाभ प्राप्त करेंगे। इस समय आप कोई नया व्यापार भी शुरू कर सकते हैं और इसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा जिसका उचित लाभ उठा कर आप अपने व्यापार में उन्नति करेंगे।

25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधियों द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डालने की कोशिश की जा सकती है। अतः सकारात्मक सोच में वृद्धि कर अपना आत्मविश्वास बनाए रखें। नौकरी करने वालों को कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। कुछ अनावश्यक खर्च बढ़ सकते हैं। परिवार में खर्च अधिक होने के कारण इच्छित बचत नहीं कर पाएँगे। 29 मार्च से एकादश स्थान में गुरु के गोचरीय प्रभाव से आय के स्रोत बढ़ेंगे जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से भी मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिल सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय अनावश्यक खर्च से आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः अभी से कुछ अतिरिक्त धन संचय करें। परिवार में किसी सदस्य का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है जिसमें आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीयस्थ राहु के कारण आपका पारिवारिक वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। परिवार में कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। अतः अच्छा यही

होगा की अपनी अपने सहन-शक्ति को बढ़ाएं। अन्यथा आपके संबंध खराब हो सकते हैं। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर बने रहेंगे। आपके बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

29 मार्च के बाद घरेलू वातावरण में कुछ अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। समाज में आपका मान-सम्मान बढ़ेगा। जन कल्याण के लिए कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। वर्षान्त में सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। द्वादश स्थान के गुरु संतान के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। 29 मार्च से गुरु का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है। उस के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। सन्तान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

25 अगस्त के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। आपको संतानोत्पत्ति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण पढ़ाई-लिखाई भी प्रभावित हो सकती है। संतान को लगातार अथक प्रयास करने के बाद ही सफलता प्राप्त होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वादशस्थ गुरु के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आप जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे और अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद समय और अच्छा हो रहा है।

25 अगस्त के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं यकृतजनित बीमारी से परेशान हो सकते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए श्रेष्ठतम रहेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप सारे शत्रुओं को छोड़कर अपने करियर में आगे रहेंगे। 29 मार्च से विद्यार्थियों के लिए समय और भी अच्छा हो रहा है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे।

25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को उस समय सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होगी। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती ही रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

25 अगस्त के बाद आपकी लम्बी-लम्बी यात्राएं भी खूब होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। नवम स्थान पर शनि की दृष्टि आपको धार्मिक यात्रा भी कराएगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा करना, गरीबों को दान देना, भूखे को खाना खिलाना और दूसरे की सहायता करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी तथा आप गुरुदीक्षा लेंगे। धर्म पत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।